the pioneer
LUCKNOW WEDNESDAY | FEBRUARY 27, 2013

Have fresh cane juice at Ikshu hub

PIONEER NEWS SERVICE ■ LUCKNOW

Lucknowites may have the privilege of enjoying natural flavour and aroma of fresh cane juice at the IISR's Ikshu hub. The much-awaited Ikshu hub was inaugurated on Tuesday at the IISR by Dr Swapan K Datta, Deputy Director General (Crop Sciences), ICAR, New Delhi.

The IISR will now make available all variants of health food made from sugarcane juice like jaggery (free from chemicals), cane juice syrup, vinegar, dry fruits fortified jaggery chikki, barfi, jaggery chocolate, candy and toffees

The scientists at the IISR said that the jaggery was supposed to be the most wholesome and healthy sugar in the world due to its inherent richness in minerals, vitamins and proteins so the city folks may now get the opportunity to taste natural sugars i.e. jaggery and other value added products made from cane juice and jaggery in order to improve health and fitness.

Dr Jaswant Singh, Principal Scientist and incharge of Ikshu Hub, said that the Institute would make all posible efforts to supply and sell fresh juice and other products throughout the coming summer season which may be another step forward towards service to the city folks and Lucknowites.

Dr Datta, DDG (CS), ICAR, visited the IISR on Tuesday and reviewed the ongoing sugarcane researches at the Institute.

While interacting with the scientists, Dr Datta appreciated the technologies like cane node method, bud chip method, sugarcane machines and tropicalisation of sugarbeet developed at IISR.

Later addressing the scientists of IISR, Dr Datta emphasised that the entire research programme should be moduled in such a way that the benefits reached the farmers immediately.

He highlighted the emerging areas of research like biotechnological approaches for development of disease, pests, stress-tolerant cane varieties, genomic sequencing, transgenic breeding etc and appealed to the scientists to make all these as components of their research programme. Genetic variability of sugarcane crop should be explored and DNA finger printing as a tool may be utilised in this.

Dr S Solomon, Director, IISR, said that the Institute had developed a package of practices for cultivation of sugarbeet as an alternate sweetener crop in tropical and sub-tropical climate.

He said that with policy level support from the government sugarbeet cultivation in the country could be enhanced which would ultimately help in meeting our sweetener requirement of the country by the year 2030 or 2050.

Dr A K Sah, Senior Scientist, said that in the year 2013 the Institute was more focused on its outreach programme in order to transfer remunerative sugarcane production technologies to the end-users in the shortest possible time.

कैनविज टाइम्स
4 बुधवार, 27 फरवरी, 2013

अब मिलेगा गन्ने का ताजा रस व गुड़

भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान में इक्षु हब का उद्घाटन हुआ

कैनविज टाइम्स ब्यूरो

लखनऊ। लखनऊ वालों के लिए अच्छी खबर है। रायबरेली रोड स्थित भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान में मंगलवार को इक्षु हब का उद्घाटन हो गया। यहां पर गन्ने का ताजा रस व रस से बने स्वास्थ्य के लिए उपयोगी उत्पाद गुड़, सीरप, सिरका, कैंडी चॉकलेट, चिक्की मिलेगा। इसका उद्घाटन भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के उप महानिदेशक (फसल विज्ञान) डॉ. स्वपन के दत्ता ने किया।प्राचीन समय से भारतीय गुड़ अपनी गुणवत्ता व पौष्टिकता के लिए विश्व में प्रसिद्ध रहा है। गुड़ और गन्ने के ताजा रस में प्रचुर मात्रा में खनिज, विटामिन, प्रोटीन व ऊर्जा रहती है। इसीलिए इसे सम्पूर्ण आहार का दर्जा दिया गया है। इस हब से गर्मी भर गन्ने का ताजा रस व गुड़ मिलेगा।

इक्षु हब के उद्घाटन अवसर पर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के उपमहानिदेशक डॉ. स्वपन के दत्ता, संस्थान के निदेशक डॉ. एस सोलोमन व अन्य वैज्ञानिक

इसके पूर्व डॉ. दत्ता ने संस्थान का भ्रमण भी किया। उन्होंने गन्ना शोध कार्यों का आंकलन किया तथा वैज्ञानिकों द्वारा किए जा रहे कार्यों को प्रयोगशाला व खेत में देखा। उन्होंने कहा कि संस्थान द्वारा विकसित नई तकनीक केन नोड, बड चिप, गन्ना खेती यंत्र, चुकंदर उत्पादन तकनीक, उन्नत प्रजातियां सभी सराहनीय हैं। उन्होंने वैज्ञानिकों से आग्रह किया कि अपनी शोध परियोजना को इस प्रकार बनाएं कि इसका लाभ जल्द से जल्द किसानों तक पहुंचे। डॉ. दत्ता ने नए शोध क्षेत्रों बायोटेक्नोलॉजी, जीनोमिक सीक्वेनसिंग, ट्रांसजेनिक ब्रीडिंग के प्रयोग पर जोर दिया, जिससे अधिक उपज तथा चीनी परता वाली प्रजातियों का विकास तेजी से हो।

संस्थान के निदेशक डॉ. एस सोलोमन ने कहा कि संस्थान ने उपोष्ण तथा उष्ण जलवायु में चुकंदर की खेती की तकनीक विकसित की है। इसके प्रयोग से चीनी उद्योग में क्रांति आ सकती है। जरूरत है सरकारी व नीतिगत सहायता की, जिससे चुकंदर की खेती किसानों द्वारा व्यापक स्तर पर की जा सके। संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. एके शाह ने कहा कि संस्थान अपने विविध प्रसार कार्यक्रमों के माध्यम से 2013 में देश के हर क्षेत्र के गन्ना किसानों तक पहुंचने का प्रयास कर रहा है।

www.samaylive.com

राष्ट्रीय सहारा

सच कहने की हिम्मत

राष्ट्रीयता • कर्त्तव्य • समर्पण

दून • वाराणसी से प्रकाशित

लखनऊ | बुधवार • 27 फरवरी • 2013

गन्ना अनुसंधान परिसर में 'इक्षु हब' का शुभारम्भ

सरोजनीनगर-लखनऊ (एसएनबी)। भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान द्वारा मंगलवार को संस्थान परिसर में ''इक्षु-हब'' का शुभारम्भ किया गया। इसका उद्घाटन भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (फसल विज्ञान) के उपमहानिदेशक डा. स्वपन के. दत्ता ने किया। संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. एके साह ने बताया कि इस हब से शहरवासियों को ताजा गन्ने का रस एवं रस से बने स्वास्थ्यवर्धक उत्पाद गुड़, सीरप, सिरका, कैण्डी, चॉकलेट, चिक्की मिलेंगे।

डा. दत्ता ने संस्थान भ्रमण के दौरान वैज्ञानिकों को संबोधित करते हुए कहा कि संस्थान द्वारा विकसित नई तकनीक केन-नोड, बड-चिप, गन्ना खेती यंत्र, चुकन्दर उत्पादन तकनीक, उन्नत प्रजातियां सराहनीय हैं। संस्थान देश में चीनी उद्योग एवं गन्ना के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगा।

▶ ताजा गन्ने का रस व अन्य उत्पाद उपलब्ध होंगे

उन्होंने वैज्ञानिकों से अपील करते हुए कहा कि वह ऐसी शोध परियोजनाएं बनाएं जिसका लाभ जल्द से जल्द किसानों तक पहुंचे। डा. दत्ता ने बायोटेक्नोलॉजी, जीनोमिक व ट्रान्सजेनिक ब्रीडिंग के प्रयोग पर जोर दिया। इस मौके पर संस्थान के निदेषक डा. सुशील सोलोमन ने कहा कि संस्थान ने उपोष्ण एवं ऊष्ण जलवायु में चुकन्दर की खेती की तकनीक विकसित की है, जिसके उपयोग से चीनी उद्योग में क्रांति आ सकती है। जरूरत है सरकारी व नीतिगत सहायता की, जिससे चुकन्दर की खेती किसानों द्वारा वृहत स्तर पर की जा सके और वर्ष 2030 तथा 2050 तक देश की मिठास की जरूरतों को पूरा करने में अहम योगदान दे पाये। डा. सोलोमन ने कहा कि वर्ष 2013 में संस्थान विकसित तकनीकों को किसानों तथा चीनी मिलों तक कम समय में पहुंचाने के 'आउटरीच प्रोग्राम' पर ज्यादा ध्यान देगा तथा हर संभव प्रयास करेगा जिससे विकसित तकनीकों का लाभ किसानों तथा चीनी उद्योग को कम से कम समय में पहुंचे।